Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 10 | OCTOBER 2024

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 विद्यालय स्तर पर पुनर्गठन एवं परिवर्तन

**डॉ.आशा शर्मा** [1]

[1] **प्राचार्या, श्रीमती हेलेना कौशिक महिला शिक्षक प्रशिक्षण, महाविद्यालय, मलसीसर, झुन्झुनू.**

**ABSTRACT:**

राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति-2020 विद्यालय स्तर पर शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन से तात्पर्य शिक्षार्थियों का समग्र विकास है अर्थात् बालक के जीवन के सभी पहलुओं- शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, सौन्दर्य, नैतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक विकास हो सके। विद्यालय परिवर्तन से तात्पर्य वे परिवर्तन है जिससे छात्र अपने विद्यालय बार बार बदलते रहते है। नई शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढ़ाँचे को पुनर्गठित किया गया है जिससे कि 3-8, 8-11, 11-14 और 14-18 की उम्र में विभिन्न पड़ावों पर विद्यार्थियों के विकास की अलग-अलग अवस्थाओं के अनुसार उनकी रुचियों और विकास की जरुरतों पर समुचित ध्यान दिया जा सके।

**KEYWORDS:**

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020, पुनर्गठन एवं परिवर्तन**

| PAPER ACCEPTED DATE: | PAPER PUBLISHED DATE: |
|---|---|
| 28th October 2024 | 31st October 2024 |

**प्रस्तावना-**

भारत में पिछले दो दषकों अत्यधिक संख्या में विद्यालयों की खराब गुणवत्ता के कारण छात्र सरकारी विद्यालयों से पलायन कर गये जिसके कारण देश भर में छोटे-छोटे निजी विद्यालय खुल गये। ये संक्रमण युवा लोगों के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाते है। विद्यार्थियों के समग्र विकास से तात्पर्य सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षा विधि का समग्र केन्द्र बिन्दु शिक्षा प्रणाली को रटने की पुरानी प्रथा से अलग वास्तविक समझ और ज्ञान की ओर ले जाना है। शिक्षा का उद्देश्य केवल सज्ञांनात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और इक्कीसवी शताब्दी के मुख्य कौशल से सुसज्जित करना है।

**प्रारम्भिक अवधारणा-** बच्चों के ज्ञानात्मक, शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक सुदृढ़ता के लिए खेल अनिवार्य है। खेल बच्चों के शारीरिक (दौड़ना, कूदना, चढ़ना आदि) बौद्धिक (सामाजिक कौशल, समुदाय नियम, नैतिकता और सामान्य ज्ञान)और भावनात्मक विकास (सहानुभूति, करुणा और दोस्ती) के अवसर प्रदान करता है। खेल के माध्यम से बच्चे बहुत ही कम उम्र में अपने आस-पास की दुनिया के सम्पर्क में आते है और परस्पर क्रियाकलाप करते है। खेल बच्चों को एक ऐसे संसार की रचना करने और खोज करने की अनुमति देता है जिसमें वे कभी- कभी अन्य बच्चों या देखभालकर्ताओं के साथ संयुक्त रुप से वयस्कों के समान भूमिका निभाते समय अपने भय पर विजय पाकर मास्टर बन जाते है।

**आधुनिक अवधारणाऐं-** सामान्य रुप से माना जाता है कि बच्चों को कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए और उन्हें काम करने की जरुरत नहीं होनी चाहिए, जीवन खुशहाल और परेषानियों से मुक्त रहना चाहिए। आमतौर पर बचपन व्यस्कों के हस्तक्षेप के बिना,अभिभावकों से अलग रहकर खेलने, सीखने, मेल-मिलाप, खोज करने का समय है। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आज का आधुनिक बचपन कम्प्यूटर, विडियों गेम, टेलीविजन के साथ-साथ मोबाइल और सोशल मिडिया के दुष्परिणाम का शिकार होता जा रहा है। आज के बालक का ज्यादा से ज्यादा समय मोबाइल गेम खेलते हुऐ या सोशल मिडिया पर चैट करते हुऐ व्यतीत हो रहा है। जिसके कारण बच्चे जिनका पालन पोषण त्वरित और दबावपूर्ण शैली में होता है, ऐसे बच्चे अन्य बच्चों द्वारा संचालित खेल से हासिल होने वाले लाभों से वंचित हो सकते है। जिन बच्चों के अभी खेलने कूदने और पढ़ाई करने के दिन है, उन्हें रोटी की लड़ाई शुरू करनी पड़ रही है। इस से बुरी बात और क्या हो सकती है। लेकिन यह सच है कि इन बच्चों को अपना घर परिवार चलाने में सहयोग देने के लिए बाल्यावस्था में ही काम करने को मजबूर होना पड़ता है। विडंबना यहीं समाप्त नहीं होती है। रोजगार के नाम पर हर जगह इन बच्चों का शोषण हो रहा है। दुनिया में कोई 50 करोड़ बच्चे अपने बचपन की अठखेलियों को भूलकर रोटी की समस्या से जूझ रहे है। इसे दूर करने के लिए एक समग्र स्वास्थ्य कार्यक्रम माताओं और बच्चों के लिए पूरक पोषण, 14 वर्ष की आयु तक सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और मनोरजक गतिविधियों को बढावा, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति जैसे कमजोर वर्गो के बच्चो की विशेष देखभाल शामिल है।

आज बाल मजदूरी समाज पर कंलक है। इसको समाप्त करने के लिए सरकारों और समाज को मिलकर काम करना होगा। प्रभावी रुप से अनेक योजनाऐं प्रारम्भ करनी होगी, जिससे बालश्रम को रोका जा सके और बालको के उत्थान एवं अधिकारों का लाभ पहुँचाया जा सके। शिक्षा सभी बच्चों के लिए अनिवार्य करने के साथ-साथ सब बच्चों तक शिक्षा की पहुँच हो सके इसके भी पुक्ता इंतजाम करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रयास किये गऐ है।

खेल को बच्चों के श्रेष्ठ विकास के लिए इतना महत्वपूर्ण माना जाता है कि इसे **मानवाधिकार संयुक्त राष्ट्र उच्च आयोग** में प्रत्येक बच्चे के अधिकार के रुप में मान्यता प्रदान की गई है। भारत में बाल पोषण एवं दुव्र्यवहार के विरुद्ध सबसे महत्वपूर्ण कानून 2012 में पारित यौन अपराध के खिलाफ बाल संरक्षण कानून 2012 पोक्सो दिलाना है। यह **कानून** खासकर उन बच्चों को ध्यान में रख कर जो मानसिक रुप से अस्थिर है। इन सब उपायों, योजनाओं को प्रभावी तरीके से अमल में लाना होगा क्योकि "बालक ही भारत का भविष्य है।

**अध्ययन का औचित्य-** अध्ययन का औचित्य यह स्पष्ट करता है कि विशेष विषय पर शोध करना क्यो आवश्यक है। यह शोध की प्रासंगिकता, उपयोगिता, और योगदान को उजागर करता है। शोध का विषय समाज, शिक्षा, विज्ञान, अर्थव्यवस्था या अन्य किसी क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण समस्या को उजागर करता है। वर्तमान समय मे इस समस्या का अपेक्षित समाधान प्रस्तुत करती है।

**अध्ययन के उद्देश्य- राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य-** शैक्षिक क्षेत्र में भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाने के लिये भारत शिक्षा को उचित स्तर प्रदान करने तथा गुणवत्ता को उच्च बनाये रखने के लिये बच्चों को तकनीकि तथा रचनात्मकता के साथ-साथ उच्च स्तर की गुणवता पूर्ण शिक्षा के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति का निर्माण किया गया है। नई शिक्षा नीति के **उद्देश्य निम्नलिखित है-**

- नई शिक्षा नीति 2020 स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। जिसमें बुनियादी

तौर पर बदलाव किये गये है। जैसे शैक्षिक क्षेत्र को तकनीकी से जोड़ा जायेगा। जिसमें सभी स्कूलों में ज्यादा से ज्यादा डिजिटल उपकरण दिये जायेगें।

- बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिये क्षेत्रीय भाषा और मातृभाषा को बढावा देने के लिये नई शिक्षा नीति में विशेष जोर दिया गया है।
- बच्चों को 6 वी कक्षा से व्यवसायिक प्रशिक्षण (इन्टर्नशिप) दी जायेगी तथा कोडिगं भी सिखाई जायेगी।
- नई शिक्षा नीति के तहत बच्चों को विषय चयन में अनेक विकल्प रखे गये है। जिसमें बालक कोई स्ट्रीम न चुनकर अपनी इच्छा अनुसार विषय चयन कर सकेगा।
- छात्रों को जिस क्षेत्र में अधिक रुचि है जैसे- खेल, कला, बॉक्सिंग, रेसिगं आदि में बढावा दिया जायेगा।
- छात्रों पर पढाई का बोझ कम करने के लिये हर संम्भव कोशिश नई शिक्षा नीति में की गई है।
- नई शिक्षा नीति में 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 3 तक के सभी छात्रों के लिये संख्यात्मक ज्ञान तथा साक्षरता को प्राप्त करने के लिए एक राष्ट्रीय मिशन योजना तैयार की जायेगी।
- बच्चों के स्वास्थ्य की देखभाल हेतु कार्ड बनाये जायेगें।
- बच्चों को ऑफलाइन कक्षाओं के साथ-साथ ऑनलाइन माध्यम से भी पाठ्यक्रम उपलब्ध करवाये जायेगें।

**अध्ययन की उपयोगिता-** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में विद्यालय स्तर पर कई महत्वपूर्ण बदलाव और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखा गया है। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी, लचीला और छात्रों के सर्वांगीण विकास पर केन्द्रित बनाना हैं। छात्रों को कला, विज्ञान और वाणिज्य के बीच बिना किसी कठोर विभाजन के अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन करने की अनुमति होगी। स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढॉचे को विभिन्न विकासात्मक चरणों में शिक्षार्थियों की रुचियों और माँगों के अनुरुप बेहतर ढ़ंग से प्रस्तुत करने के लिए संशोधन किया जाएगा, जो क्रमशः 3-8, 8-11, 11-14 और 14-18 वर्ष की आयु वर्ग के अनुरुप है। इसलिए आधारभूत चरण, प्रारम्भिक चरण, मध्य चरण और माध्यमिक चरण से युक्त 5$3$3$4 डिजाइन, स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम, शैक्षणिक संरचना और पाठ्यचर्या ढाँचे के आधार के रुप में कार्य करेगा। आधारभूत चरण पाँच वर्षो तक चलेगा और इसमें प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धति के साथ-साथ लचीला, बहु-स्तरीय, गतिविधि आधारित शिक्षण शामिल होगा। प्रारम्भिक चरण नामक तीन वर्षीय शैक्षिक कार्यक्रम, आधारभूत चरण के खेल, खोज और गतिविधि आधारित शैक्षणिक और पाठ्यचर्या सम्बन्धि दृष्टिकोणों का विस्तार करेगा। मध्यचरण तीन वर्षों का होगा और इसमें प्रारम्भिक चरण की शिक्षाशास्त्र और पाठयक्रम जारी रहेगी, साथ ही अधिक अमूर्त विचारों के अध्ययन और चर्चा को सुगम बनाने के लिए विषय शिक्षकों को भी शामिल किया जायेगा। मध्य चरण की विषय उन्मुख शिक्षाशास्त्र और पाठ्यचर्या शैली पर आधारित, माध्यमिक चरण में चार वर्षो का बहु-विषयक अध्ययन होगा, लेकिन इसमें अधिक गहनता और आलोचनात्मक सोच होगी।

एनईपी 2020 में उल्लिखित पाठयक्रम और शैक्षणिक सुधारों का उद्देश्य शिक्षा को वास्तविक दुनिया के कौशलों के साथ जोड़ना, समग्र विकास को बढावा देना और छात्रों को 21वी सदी की चुनौतियों के लिए तैयार करना है। वर्तमान प्रणाली रटने और विषय-वस्तु आधारित शिक्षा पर जोर देती है, जो आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और रचनात्मकता को सीमित करती है पाठ्यक्रम के पुनर्गठन से छात्रों को व्यावसायिक कौशल, कला और शारीरिक शिक्षा सहित विभिन्न विषयों से परिचित कराया जाता है। यह समग्र दृष्टिकोण छात्रों के सर्वांगीण कौशल विकास को सुनिश्चित करता है, जिससे वे बदलते वैश्विक परिदृश्य में सफल होने के लिए सशक्त बनते है। एनईपी 2020 बहु विषयक शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देती है, विषयों की सीमाओं को तोड़ती है और विभिन्न विषयों के एकीकरण को प्रोत्साहित करती है। यह दृष्टिकोण समग्र शिक्षा को बढावा देता है।

**नई शिक्षा नीति 2020 ने भारत कि स्कूली शिक्षा प्रणाली में व्यापक पुनर्गठन और परिवर्तन का प्रस्ताव दिया है। इसका उदेश्य शिक्षा को समावेशी, लचीला, बहुपर्यायी और बाल केन्द्रित बनाना है। विद्यालय स्तर पर पुनर्गठन और परिर्वतन का मॉडल निम्नलिखित है-**

| क्र.स. | चरण | कक्षा | आयु समूह | विवरण |
|---|---|---|---|---|
| 01 | फाउण्डेशनल स्टेज | बालवाडी (3 वर्ष ) कक्षा 1 -2 | 3 से 8 वर्ष | खेल आधारित और गतिविधि आधारित शिक्षा |
| 02 | प्रिपरेटरी स्टेज | कक्षा 3-5 | 8 से 11 वर्ष | भाषा, विज्ञान, गणित और प्रयोगात्मक शिक्षा |
| 03 | मिडल स्टेज | कक्षा 6-8 | 11 से 14 वर्ष | विषय आधारित अध्ययन तथा व्यावसायिक शिक्षा की शुरूआत |
| 04 | सेकेंडरी स्टेज | कक्षा 9-12 | 14 से 18 वर्ष | बहुविषयक शिक्षा, वैकल्पिक विषय, कौशल विकास |

**01 पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर जोर -** पहली बार 3-6 वर्ष की आयु को बच्चो की शिक्षा को स्कूली शिक्षा का आधार बनाया गया आँगनबाडी और प्री-स्कूल शिक्षा को प्रारम्भिक आधार माना गया।

**02 मातृभाषा में शिक्षा-** (कक्षा 5 तक) छात्रों को कक्षा 5 से 8 तक मातृभाषा स्थानिय भाषा और क्षेत्रीय भाषा में अध्ययन का सुझाव । इससे समझ और अभिव्यक्ति में सुधार होगी।

**03 बहुभाषी शिक्षा को बढाना-** नई शिक्षा नीति में त्री-भाषा सूत्र को अपनाया गया है जिसमें कम से कम दो भारतीय भाषाऐ शामिल हो।

**04 कोडिंग और व्यावसायिक शिक्षा-** कक्षा 6 से कोडिंग और व्यावसायिक शिक्षा की शुरूआत।

**05 मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव -** मूल्यांकन अब समझ, सोचने की क्षमता , रचनात्मकता पर आधारित होगा कक्षा 3, 5 और 8 में राष्ट्रीय स्तर की समझ आधारित मूल्यांकन परीक्षा आयोजित की जायेगी।

**06 रिपोर्ट कार्ड का पुनर्गठन-** अब रिपोर्ट कार्ड में आत्ममूल्यांकन, सहपाठी मूल्यांकन और शिक्षक का मूल्यांकन शामिल होगा।

**07 डिजिटल शिक्षा का समावेश-** DIKSHA, SWAYAM, E- PATHSHALA जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म का विस्तार । शिक्षा के डिजिटलीकरण पर बल।

**08 स्कूल परिसरों का एकीकरण -** छोटे व अलग अलग स्कूलो को एक "स्कूल कॉम्प्लेक्स" के तहत एकजुट किया जायेगा ताकि संसाधनो का अधिकतम उपयोग हो सके।

**09 इन्क्लूसिव और समावेशी शिक्षा-** वंचित वर्गो विशेष कर बालिकाओं, दिव्यांगजनो और सामाजिक रूप से पिछडे वर्गों के लिए विशेष योजनाऐ ।

**निष्कर्ष-**

"नई शिक्षा नीति 2020 में बालकों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुये विद्यालयी शिक्षा को चार भागों में बॉटा गया है। जिससे तीन साल की उम्र से ही बालक खेल-खेल में विद्यालय जाना, सामाजिक व्यवहार, दोस्तो के साथ रहना, खेलना सीख जायेगा, साथ विद्यालयी शिक्षा पूर्ण करते-करते बालक व्यवसायिक शिक्षा का भी प्रशिक्षण ले लेगा। यह शिक्षा उसको रोजगार प्राप्ति में सहायक होगी। नई शिक्षा नीति 2020 में परिणाम को भी चार भागों में बॉटा गया है- 01 अंक, 02 स्व-मूल्यांकन, 03 सहपाठी/दोस्त, 04 अध्यापक। इस आधार पर हम कह सकते है कि नई शिक्षा नीति 2020 से ''शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास'' प्राप्त किया जा सकेगा। राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति 2020 विद्यालय स्तर पर शिक्षा की गुणवता , समानता, समावेशीता और लचिलापन बढाने की दिशा में एक क्रान्तिकारी कदम है। यह नीति भारत को 21 वीं सदी की शिक्षा प्रणाली के अनुरूप तैयार करती है। निष्कर्ष रुप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 निर्माताओं, विद्यार्थियों, शिक्षको, प्रशासकों तथा आम जनता के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इससे शिक्षा क्षेत्र में सुधार या विकास की संभावना

बनती है।

**सुझाव:-**

- नई नीति के तहत बालकों की परवरिश कैसे की जाऐ? माता-पिता बच्चों को आदेश नहीं दे बल्कि उनके साथ दोस्त बनें, दोस्तों जैसा व्यवहार करें।
- बालकों का पालन इस तरह से करें कि बच्चें की अपनी समझ विकसित होने दे।
- बालकों को स्वाभाविक रुप से सीखने देना चाहिए। बालक को प्रकृति अपने आप बहुत कुछ सिखा देती है।
- बालक माता-पिता और शिक्षक का सौभाग्य है अतः बालको को अपना सौभाग्य मानकर जीएं।
- माता-पिता एवं अध्यापक स्वंय वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप बच्चों से चाहते है। बच्चों के सामने आदर्श प्रस्तुत करें।
- माता-पिता को अपने बच्चों में भेद-भाव नहीं करना चाहिए लड़का हो या लड़की उनकी परवरिश समान होनी चाहिए।
- बाल व्यापार, बाल श्रम को रोकने के कारगर उपाय किये जाने चाहिए।
- बाल व्यापार को रोकें, बालकों को स्वभाविक जीवन जीने दें ये उनका अधिकार है। उनके लिए उचित शिक्षा की व्यवस्था करें। उनके सहयोगी बने, उनके साथ दोस्ताना व्यवहार कर दोस्त बनें।

## REFERENCES

1. Handbook of National Education Policy- 2020 (5 Vol.Set) लेखक - डॉ. वीणा भल्ला एवं ममता रानी अग्रवाल

2. National Education Policy & 2020 : Perspectives, Challenges and Issues लेखक - नित्ताला नाओल, प्रशातं

3. NEP 2020 – At a Glance for Educators: Towards Excellence लेखक - डॉ. धीरज मेहोत्रा

4. National Education Policy 2020: The Key to Development in India (Vol- 1) लेखक - डॉ. आर. मुरूगेशन एवं डॉ. डी.सेनदिल कुमार

5. सिंह , प्रोफेसर दिनेश (29 जुलाई 2020) '' स्कूली और उच्च शिक्षा '' की बेडिया खोलेगी नई शिक्षा नीति हिन्दुस्तान लाइव (30 जुलाई 2020)